योग तो पढ़ना ही नहीं है। वो भले योग में जा सकते हैं, योग सीख सकते हैं; परन्तु पढ़ाई नहीं पढ़ सकते हैं। पढ़ाई पढ़ना यह तो गृहस्थी धर्म वालों का है। सन्यासी कभी स्कूल में नहीं जाएँगे। सन्यास किया...। सन्यास के पहले स्कूल में भले जाते हों कोई न कोई एम ऑब्जेक्ट से पढ़ने के लिए। पीछे डॉक्टर बनें, क्या भी बनें। तो वो वास्तव में गाया तो ऐसे ही जाता है कि ये फकीर हैं; क्योंकि सन्यास का कपड़ा है ना। तो फकीर हैं; क्योंकि उनको खान–पान तो बनाना नहीं है। तो जैसे फकीर हो गए। भिक्षा बिगर ये खा नहीं सकते हैं। (किसी ने मातेश्वरी को अलविदा देते हुए गीत गाया) वो अपनी बच्ची को बोलता है जाओ पति के पास।.....तो बरोबर पियर घर से पतियों के पति के पास गई। यह तो अच्छा ही हुआ ना पति के घर गई। इसमें कोई मूँझने की तो बात ही नहीं है। अच्छा ।